श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

श्री वेङ्कटेशकवि विरचितम्

॥ श्रीमद्वेदान्तदेशिकगद्यम् ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

॥ श्रीमद्वेदान्तदेशिकगद्यम् ॥

जयत्यखिल दुर्वादि तिमिरौघ दिवाकरः।
श्रित ताप प्रशमनस्त्रय्यन्तार्य सुधाकरः॥

जय जय महादेशिक !

निगमान्तदेशिक !

विश्वालङ्कार विश्वामित्र पवित्रगोत्र कलशोदधि कौस्तुभ !

विबुधवैरि वरूथिनी वित्रासि वेङ्कटेश विमल घण्टावतार !

अनन्तसदृशानन्त गुणाकरानन्त गुरुनन्दन !

शोभनचरित सुलोचनोत्तम तोतारम्बालोचन चकोरचन्द्र !

बहुमुखमखतोषित पुण्डरीकाक्ष पुण्डरीकाक्षसूरि पुण्यफलभूत !

वत्सकुलतिलक वरदाचार्य वीक्षित !

ब्रह्मवित्प्रवरानन्तार्यविहित ब्रह्मोपदेश !

वादिहंसवलाहक मातुल रामानुजाचार्य सकाश लब्ध सकल वेद वेदाङ्ग तर्क मीमांसा शब्द वेदान्त शास्त्रजात !

विंशत्यब्दे विश्रुत नानाविध विद्य !

स्वपादाम्बुजध्यान सुप्रसन्न तुरङ्गमुख मुख विनिस्सृत लाला सुधापान लब्ध सार्वज्ञ्य !

ज्ञानभक्ति वैराग्य वात्सल्य सौशील्यौदार्य चातुर्य माधुर्य स्थैर्य धैर्य कारुण्य क्षमा शमदमाद्यनन्त कल्याणगुणभूषण !

शुभकुलप्रसूत तुल्यगुणलक्षण प्रेयसीसहचरित सकलधर्म !

हयवदन देवनायकाच्युत गोपाल रघुवीर रणपुङ्गव वरद नरहरि यथोक्तकारि दीपप्रकाश देहळीश वेङ्कटेश रङ्गेश पक्षीश हेतीश यतीश रमा क्षमा गोदा विषयस्तोत्र सुधारञ्जित सहृदय बुधजन हृदय !

परदेवतापारमार्थ्यवेदि वसिष्ठ पराशर व्यास प्राचेतस वैशम्पायन बोधायन शुक शौनक भरद्वाज शाण्डिल्य हारीत प्रभृति परम ऋषि समधिक वैभव !

साङ्ख्य सौगत चार्वाक शाङ्कर यादव भास्कर काणाद कौमारिलमततमो निवारणदिवाकर !

पाषण्डद्रुमषण्डखण्डन चण्डपवन !

श्रीवेङ्कटाचल वारणाचल गोपनगराहीन्द्रनगर श्रीमुष्ण चित्रकूट श्रीकुम्भघोण श्रीरङ्ग श्रीवनाद्रि कुरुकापुरी प्रभृत्यष्टोत्तरशत विष्णुदिव्यस्थान सेवा सन्तोष रचित पदविन्यास पवित्रीकृत पृथिवीमण्डल !

यतिपति यामुनार्य नाथमुनि फणिति परिष्कार पाञ्चरात्ररक्षा रहस्यरक्षा निक्षेपरक्षा सच्चरित्ररक्षा गीतार्थसङ्ग्रहरक्षा शतदूषणी सर्वार्थसिद्धि तत्त्वमुक्ताकलाप तत्त्वटीका तात्पर्यचन्द्रिका न्यायपरिशुद्धि न्यायसिद्धाञ्जनाधिकरणदर्पणाधिकरणसारावळि सङ्कल्पसूर्योदय यादवाभ्युदयाद्यनेक दिव्यप्रबन्ध निर्माण सामर्थ्य सन्दर्शन सन्तुष्ट श्रीरङ्गनाथ दिव्याज्ञालब्ध वेदान्ताचार्यपद !

तद्वल्लभाकृपासंप्राप्त सर्वतन्त्रस्वतन्त्रता बिरुद !

सन्दर्शनमात्र निरस्त समस्त दुर्वादिसङ्घ !

त्रिंशद्धारं श्रावित शारीरकभाष्य !

छात्रजन निबद्ध जैत्रध्वज प्रसाधित दशदिशा सौध !

एकयामिनी यामनिर्मित पादुकासहस्र श्रवण सञ्जात विस्मय रङ्गेश
विश्राणित कवितार्किकसिंह समाख्या विख्यात वैदग्ध्य !

संसार दावानल सन्तप्त सञ्जीवन सरसामृत परीवाहरूप सारसार
रहस्यत्रयसाराभयप्रदानसार गुरुपरंपरासार सारसङ्क्षेप
सारसङ्ग्रहोपकारसङ्ग्रह विरोधपरिहार प्रधानशतक परमपदसोपान
तत्त्वपदवी रहस्यपदवी तत्त्वनवनीत रहस्यनवनीत तत्त्वमातृका
रहस्यमातृका तत्त्वसन्देश रहस्यसन्देश रहस्यसन्देशविवरण
रहस्यशिखामणि तत्त्वत्रयचुलक रहस्यत्रयचुलक
मुनिवाहनभोगाञ्जलिवैभव संप्रदायपरिशुद्धि हस्तिगिरिमाहात्म्य
परमतभङ्ग तत्त्वरत्नावळी तत्त्वरत्नावळिप्रतिपाद्यसङ्ग्रह रहस्यरत्नावळी
रहस्यरत्नावळीहृदयरञ्जित रमासहाय नित्यबहुमत !

पाञ्चरात्र प्रतिपादिताभिगमनोपादानेज्या स्वाध्याय योगरूप
पञ्चकालपरायण !

सम्यक् प्रदर्शित षडङ्गाष्टाङ्गयोग !

पराङ्कुश परकाल भक्तिसार कुलशेखर श्रीविष्णुचित्त मुनिवाहनादि
मुनिवररचित दिव्यप्रबन्धतात्पर्य प्रपञ्चन परितोषित बुधजन !

त्रिरत्नगाथा श्रीवैष्णवदिनचर्यार्थपञ्चकसङ्ग्रह श्रीचिह्नमाला
गीतार्थसङ्ग्रहगाथा शरणागतिसङ्ग्रहगाथा द्वादशनामगाथा

मूलमन्त्रगाथा द्वयगाथा चरमश्लोकसङ्ग्रहगाथाऽऽहारनियमगाथा घुटिकागाथा कुबेराक्षीगाथा कन्दुकगाथा परिहासगाथा डोलागाथा नवरत्नमाला प्रबन्धसाराद्यनेक दिव्यप्रबन्धनिर्माण परितोषित वरप्रसादलब्ध वरगुणभूषित वरदाचार्य सत्पुत्र !

सापराध लक्ष्मणार्य दुर्वर्ण सुवर्ण करण प्रकटिताघटित घटनासामर्थ्य !

ब्रह्मतन्त्रस्वतन्त्रयोगि प्रभाकरयोगि नवनीतनर्तकयोगि वरदाचार्य रामानुजाचार्यप्रभृति सच्छिष्योपदिष्ट त्रय्यन्तयुगळ सारसारादि सद्रहस्यजात !

सुदर्शनसूरि विरचित श्रुतप्रकाशिका परिरक्षण परिशोधन प्रतिपादन परिवृढ !

यतिपति परिचित यादवाचलवासि नारयण चरणाम्बुजसेवा संहृष्टमानस !

स्वनिर्मितातिशयितानन्त दिव्यप्रबन्ध प्रवर्तन रसभरनीत शतसंवत्सर !

सरसिज सदृश चरणयुगळ !

सितान्तरीय शोभमान कटितट !

व्याख्यामुद्रा पुस्तकभूषण भूषित करद्वय !

विमलोपवीत सूत्तरीय तुलसी नळिनाक्षमाला विराजित विशाल वक्षःस्थल !

पूर्णेन्दु समवदन !

लसदूर्ध्वपुण्ड्र !

दिनकरसन्निभ दिव्यमङ्गळविग्रहोज्ज्वल !

श्रीरङ्गनाथ पदकमल निरन्तरानुभव निरतिशयानन्द परिपूर्णमनोरथ !

विशुद्ध विद्याभूषण !

विबुधजननाथ !

वेङ्कटनाथ !

मम नाथ !

नमस्ते नमस्ते नमः !

नमः पद्माक्षपौत्राय नमोऽनन्तार्यसूनवे।
नमो वरदनाथाय वेदान्ताचार्यसूरये॥

निर्मितं वेङ्कटेशेन वेदान्ताचार्य वैभवम्।
सङ्कीर्तयेत् प्रतिदिनं वेदान्ताचार्य भक्तिमान्॥

श्रीमते भगवते तूप्पुल् निगमान्तमहादेशिकाय नमः॥

॥ इति श्रीमद्वेदान्तदेशिकगद्यं समाप्तम्॥